International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-12-2024, Accepted: 06-01-2025, Published: 21-01-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 23-28

आधुनिक हिंदी और सिंहली कविताओं में परिलक्षित नारी–जीवन की यथा स्थिति का तुलनात्मक अध्ययनः सुमित्रानंदन पंत और महगम सेकर की कविताओं के आधार पर

डी. पी. सिनालि नदीपमा पतिरण[1], डॉ. निलंति राजपक्ष[2]
[1] अथिति प्राध्यापिका, भाषा, सांस्कृतिक अध्ययन और प्रासांगिक कला विभाग श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, श्रीलंका
[2] प्रोफेसर, भाषा, सांस्कृतिक अध्ययन और प्रासांगिक कला विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, श्रीलंका

सारांश
मानव समाज का सदस्य होने के कारण समाज के साथ मानव का संबंध घनिष्ठ होता है। समाज में निरंतर घटित होते रहने वाली घटनाओं से प्रेरित होकर मानव साहित्य में समाज की यथा स्थिति का चित्रण करने लगा। हिंदी एवं सिंहली पद्य साहित्य में समाज का यथा स्वभाव कई स्वरूपों में परिलक्षित हुआ। शोषित वर्ग, पूँजीपति वर्ग एवं मध्य वर्ग के लोगों से संबंधित समस्याएँ, सामाजिक विश्वासों की यथा स्थिति एवं नरी से संबंधित समस्याओं का भी वर्णन सुमित्रानंदन पंत एवं महगम सेकर की कविताओं में विद्यमान होती हैं। नारी जीवन के यथा स्वभाव के आधार पर समाज की वास्तविक स्थिति को उभारने के लिए दोनों कवियों ने जो प्रयास किया है, उसपर तुलनात्मक अध्ययन करना इस शोध का प्रमुख लक्ष्य है। इस शोध की समस्या यह है कि नारी जीवन की यथा स्थिति को दर्शाते समय कौन–सी साम्यविषमताएँ दोनों कवियों के काव्य रचनाओं में विद्यमान होती हैं? यह शोध गुणात्मक शोध प्रविधि के आगमनात्मक दृ–ष्टिकोण के आधार पर किया गया और आँकड़े विश्लेषण करते समय पाठ विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग किया गया। प्राथमिक स्रोतों के रूप में सुमित्रानंदन पंत एवं महगम सेकर के काव्य ग्रंथों का और द्वितीय स्रोतों के रूप में इस शोध के विषय से संबंधित अन्य विचार ग्रंथ, शोध आलेख एवं अंतरजाल का प्रयोग किया गया। इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष किया जा सकता है कि नारी जीवन की यथा स्थिति को प्रस्तुत करते समय दोनों कवियों के कविताओं में समानताओं के साथ–साथ कुछ असमानताएँ विद्यमान होती हैं।

मूल शब्दः हिंदी, सिंहली, कविताएँ, नारी–जीवन, यथा स्थित

सामाजिक घटनाओं से प्रभावित साहित्यकारों ने समाज में होने वाले अन्यायों के चित्रण को 'समाज यथार्थ' नाम देकर अपनी साहित्यिक रचनाओं में परिलक्षित किया। हिंदी साहित्य के छायावादी युगीन प्रमुख पद्य साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत एवं सिंहली साहित्य के आधुनिक युग के कॉलँब साहित्य युग के प्रतिनिधि कवि महगम सेकर ने अपने कविताओं में समाज का यथा स्वभाव व्यक्त किया है। नारी पर होने वाले अन्यायों एवं अत्याचारों से प्रभावित होकर दोनों कवियों के मन में जो क्रांति का उद्भव हुआ, वह क्रांति काव्य का रूप धारण करके साहित्य में अवतरित हुआ। उसके फलस्वरुप हिंदी एवं सिंहली पद्य साहित्य नारी–जीवन की भी यथा स्थिति व्यक्त करने वाली महत्वपूर्ण चीज़ बन गयी। इस शोध का मुख्य लक्ष्य भी उन दोनों कवियों के द्वारा अपने काव्यों में चित्रित नारी जीवन से संबंधित यथार्थ का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

शोध–समस्या
सुमित्रानंदन पंत एवं महगम सेकर ने अपने कविताओं में किस प्रकार नारी–जीवन की यथा स्थिति का चित्रण किया है? यह इस शोध की समस्या है।

शोध प्रविध
यह शोध गुणात्मक शोध प्रविधि के आगमनात्मक दृष्टिकोण के आधार पर किया गया और आँकड़े विश्लेषण करते समय पाठ विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग किया गया। प्राथमिक स्रोतों के रूप में सुमित्रानंदन पंत एवं महगम सेकर के काव्य ग्रंथों का और द्वितीय स्रोतों के रूप में इस शोध के विषय से संबंधित अन्य विचार ग्रंथ, शोध आलेख एवं अंतरजाल का प्रयोग किया गया।

शोध विस्तार
सुमित्रानंदन पंत के काव्यों में नारी–जीवन का यथा स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

"मुक्त करो नारी को, मानव! चिर बंदिनी नारी को,
युग युग की बर्बर कारा से जननि, सखी, प्यारी को!
छिन्न करो सब स्वर्ण पाश उसके कोमल तन मन के,
वे श्राभूषण नहीं, दाम उसके बन्दी जीवन के!
पुरुष वासना की सीमा से पीड़ित नारी जीवन,
नर नारी का तुच्छ भेद है केवल युग्म विभाजन!
उसे मानवी का गौरव दे पूर्ण सत्व दो नूतन,
उसका मुख जग का प्रकाश हो उठे अन्ध अवगुण्ठन!"[1]

पंत का काव्य संग्रह 'युगवाणी' प्रगतिवादी चेतना का खजाना है, क्योंकि इसमें 'नारी' नाम से जो कविता है, उसमें नारी उद्गार करने की कोशिश भी कवि ने की है। कवि कहते हैं, हे मानव! निरंतर बंदिनी के रूप में रहने वाली नारी को मुक्त कर दो। वह केवल मात्र नारी ही नहीं है। वह कभी जननी है, कभी सखी और कभी प्यारी भी है। उसका कोमल तन को जिस स्वर्ण जाल से ओढ़ गया है, उसे हटा दो। वह सच में उसके बदन सजाने वाला आभूषण नहीं है। कभी नारी पुरुष की वासना की वस्तु बन जाती है। इसलिए वह पीड़ित जीवन बिता रही है। उसके साथ कवि कहते हैं कि नर और नारी विभाजन करने से समाज में नारी के प्रति एक न्यूनता की भावना उत्पन्न हो जाती है। नारी का निरंतर सम्मान करो। हालांकि नारी के प्रति गौरव व्यक्त करने के लिए उसकी यथा स्थिति समाज में रहने वालों को देख नहीं सकते, क्योंकि उनके नेत्रों पर पर्दा पड़ गया है।
पंत का 'ग्राम्या' नामक काव्य संग्रह में 'मज़दूरी के प्रति'नामक कविता से कवि ने एक मज़दूरी बनकर पैसे कमाने वाली औरत की दयनीय दशा व्यक्ति की है।

"नारी की संज्ञा भुला, नरों के संग बैठ,
चिर जन्म सुहृद–सी जन हृदयों में सहज पैठ,
जो बँटा रही तुम जग जीवन का काम काज

तुम प्रिय हो मुझे न छूती तुमको काम लाज!
सर से आँचल खिसका है, धूल भरा जूड़ा, –
अधखुला वक्ष ढोती तुम सिर पर घर कूड़ा;
हँसती, बतर सहोदरा–सी जनजन से,
यौवन का स्वास्थ्य झलकता आतप–सा तन से!"[2]

कवि कहते हैं कि समाज में नारी को पुरुष के समान क्यों माना जाता है? नारी को 'नारी' का संज्ञा देकर पुरुषों के साथ एक साथ बिठाने का क्या लक्षण होता है? समाज में ऐसे कामकाज होते हैं, वह कभी अपने कोमल हाथों से वे कर नहीं पाते। ऐसे होते हुए भी मर्दों के लिए उचित काम भी नारी ही करती है। कवि कहते हैं कि मुझे तो तुम प्रिय होती है, लेकिन समाज तुम पर ऐसी दयनीयता व्यक्ति नहीं करता। धूप में काम करने वाली औरत को देखकर पंत कहते हैं कि उसके सिर से पगड़ी फिसलने जा रहा है और सिर पर जो खोपा है, वह धूल से भरा है। कुछ नारी अपनी अँधकुली छाती ओढ़कर उसके सिर पर भारी कूड़ा लादकर काम करते हुए पैसे कमाती है। यहाँ 'अँधकुला' शब्द का प्रयोग करके कवि यह साबित कर दोते हैं कि वह अभी युवती है। ऐसे मेहनत करते हुए भी वह दूसरों से हँसती रहती है और दूसरों के साथ खुशी से जीवन बिताती है। कवि कहते हैं कि उसके स्वस्थ शरीर से यौवनता की झलक दिखाई देती है।

"वह समाज की नहीं इकाई,––शून्य समान अनिश्चित,
उसका जीवन मान मान पर नर के है अवलंबित।
मुक्त हृदय वह स्नेह प्रणय कर सकती नहीं प्रदर्शित,
दृष्टि, स्पर्श संज्ञा से वह हो जाती सहज कलंकित!"[3]

'ग्रामया' काव्य संग्रह में अंतर्गत 'नारी' नामक कविता से अवतरित इस काव्यांश में कवि ने पुरुष–मौलिक समाज में रहने वाली नारी की यथा स्थिति का चित्रण किया है। आप कहते हैं कि नारी समाज की इकाई मात्र नहीं होती है। हालांकि समाज में मान–मान पर नारी का जीवन पुरुष पर ही अवलंबित होने का स्वभाव विद्यमान हो रहा है। नारी अपने तहे दिल से प्रेम बाँटती रहती है। ऐसे होते हुए भी कई अपशब्दों को बताते हुए नारी को समाज में अपमानित बना दिया गया है। पुरुष–प्रधान समाज में रहनेवाली नारी की ओर हमेशा समाज में ऐसे विचार विद्यमान होते हैं। कभी नारी की प्रतिष्ठा पर पुरुष–मौलिक समाज से ध्यान नहीं आकृष्ट नहीं हो जाता है।

"जगी युग–नारी पुरुष बन्धन–मुक्त
पुरुष के बैठ समुद समकक्ष,
नव्य सत्वों से गौरव युक्त
हुआ श्रादृत शोभा का वक्ष!"[4]

नारी के प्रति पहले तो सुमित्रानंदन पंत नारी उद्गार करने की भावना से युक्त थे और कभी मज़दूरी बनकर रहने वाली नारी के प्रति अपनी दयनीयता व्यक्त की है, लेकिन इस पद्यांश में कवि नारी की ओर अलग दृष्टिकोण से देखते हुए कहते हैं कि इस वैज्ञानिक युग नारी बंधन से मुक्त होने जा रही है। वह भी पुरुष के समान समाज में रहने जा रही है। शोभा से युक्त वक्षवाली नारी समाज में सम्मानित होने वाली है। वह केवल नारी मात्र न बनकर पहले से ज़्यादा समाज का गौरव प्राप्त करके आज़ादी प्राप्त करनेवाली है। सुमित्रानंदन पंत के 'लोकायतन' नामक काव्य संग्रह में अंतर्गत 'विज्ञान' शीर्षकवाली कविता से उद्धृत इस कवितांश स्पष्ट हो जाता है कि पंत के द्वारा नारी से संबंधित समाज यथार्थवादी विचारधारा व्यक्त करते समय निरंतर नारी का गौरव दिलाने की चेष्टा की है।

"स्त्री के सत की रक्षा हो जग में
नव यौवन का हो न रक्त शोषण,
आर्थिक समता स्थापित हो भू पर
अर्ध भित्ति पर जन – संस्कृति पोषण!"[5]

'ज्योति द्वार' नामक कविता, जो पंत का महाकाव्य 'लोकायतन' के अंतर्गत में आती है, इसमें कवि ने नारी उद्गार की भावना व्यक्त की है। आप कहते हैं कि समाज में नारी की सत्ता की रक्षा हो जानी चाहिए और युवतियों को मज़दूरी बन जाने से बचा लेना है। युवती लोग रक्त बहाकर मेहनत से काम नहीं कर सकती और इसीलिए समाज में आर्थिक विषमताओं को नष्ट करके आर्थिक सम तत्व का विकास किया जाना है।

"विरहिणि, युग अभिसार करो!
मध्य युगों के कुंजों से कढ़
नवयुग नारी बन निखरो!
श्री शोभा मन्दिर हो स्त्री तन
संयम तप के मन से पावन,
न्योछावर हो प्रेम डगर पर
भू यौवन को अंक भरो!"[6]

सुमित्रानंदन पंत का काव्य संग्रह 'किरण–वीणा' में अंतर्गत 'विरहिणी' नामक कविता में नारी की यथा स्थिति कवि के द्वारा प्रस्तुत की है। नारी को 'विरहिणी' नाम से संबोधित करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी को समाज में दुख भरी दयनीय स्थिति होती है। इसलिए कवि कहते हैं कि हे विरहिनी, तुम इस युग से आगे बढ़ो। इस युग के कुंजों में न रहकर बाहर निकलो। हे विरहिनी! तुम नवयुग की नारी बन जाओ। नारी से ऐसे कहने का यह अर्थ होता है कि तत्कालीन समाज में नारी के की जो स्थिति विद्यमान थी, वह किसी भी प्रकार से उचित नहीं है। दुख और वेदना से उत्पीड़ित नारी को उस परिस्थिति से निकाल लेने की आवश्यकता होती। पंत कहते हैं कि नारी का बदन शोभा युक्त मंदिर जैसा है। उसमें संयम है और वह पावन भी है। प्रेम के रास्तों पर नारी आपना प्रेम न्योछावर कर देती है। इसलिए ऐसी नारी का उद्गार हो जाना ही है।
महगम सेकर की कविताओं में प्रस्तुत नारी–जीवन से संबंधित वास्तविक स्वरूप निम्नांकित प्रस्तुतीकरण से स्पष्ट हो जाता है।
"ඈත ගමක පුංචි පැලක තනිව හිටිය ऐत गमक पुंचि पॅलक तनिव हिटिय
මගේ ම අම්මත් මට මතක් වෙනව. मगेम अम्मत मट मतक वेनवा
උන්දත් දුක් වින්දා මැරෙන කල් ම- उन्दत दुक विन्दा मॅरेनकलम
කෑමක් නැතිව බඩට कैमक नॅतिव बडट
ඇඳුමක් නැතිව ඉණට अॅदुँमक नॅतिव इणट
හව්හරණයක් නැතිව කාගෙන්වත් हवुहरणक नॅतिव कागेनवत
බර ඇද්දා කරබාගෙන बर अॅद्दा करबागेन
දුක දුකක් බව නො දැන-"[7] दुक दुकक बव नॉदॅन।

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने तत् युगीन समाज में रहने वाली स्त्री की हालात दर्शाने की कोशिश की है। आधुनिकीकरण का युग होते हुए भी गाँव में रहनेवाली स्त्री इतनी शिक्षित नहीं रही। इसलिए घर के काम सँभालना उनके जीवन का मुख्य कर्तव्य रहा। घर से बाहर जाकर बाहर समाज की ओर ध्यान देकर दुनिया को सीख लेने का अधिकार उस युगीन स्त्री के लिए वर्जित माना गया, लेकिन कानून में ऐसा नहीं लिखा गया है

कि स्त्री को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। हालांकि समाज की मान्यता यह हुआ कि शिक्षा प्राप्त करने से ज़्यादा घर में रहकर घर के काम सँभालना स्त्री के लिए सर्वोचित होता है। एक माँ की भूमिका को लेकर कवि यह कहने की कोशिश की है कि नारी समाज में बहुत दयनीय जीवन बिताती है। साथ में कवि कहते हैं कि स्त्री लिए समाज से कोई सहारा भी नहीं मिल रहा है। ऐसे होते हुए भी वह अपना मन लगाकर अपना दायित्व बच्चों, अपने पति, परिवार और समाज के लिए शत–प्रतिशत निभा रही है।

Þනහා පයිප්පයෙන් උලා नहा पयिप्पयेन उला
රානී සබන් ඇඟ रानी सबन ॲग
පා ලා දුබල රන්වන් පාවහන් पा ला दुबल रनवन पावहन
පොතක් සම් බෑගයක් ගෙන අතින් पॉतक सम बैगयक गेन अतिन
දෑත දෙපය නිය තොල් තද රතින් රත් කොට दैत देपय निय तॉल तद रतिन रत कॉट
උලා වත්සුනු වතෙහි ගනකමට उला वत्सुनु वतेहि गनकमट
දවටා ගත වටා දිලිහෙන වයිවර්ණ සාරිය दवटा गत दिलिहेन वयिवर्ण सारिय
අම්මා බැස්සා මහට अम्मा बॅस्सा मह मगट
ගොම්මං වෙලාවට गॉम्मं वेलावट
රෑ වැඩට යාමට-"[8] रै वॅडट यामट।

समाज में नारी के हालात कवि ने इन पंक्तियों में चित्रित किया है। गरीब होने के कारण नारी अपने घर सँभालने के लिए कुछ भी कर सकती है। इसलिए इन पंक्तियों में चित्रित नारी के द्वारा वेश्यावृत्ति को अपना जीवन बनाकर पैसे कमायी जाती है। वह बात कवि ने सीधे न बताकर व्यंग्य से लिखा है। संध्या के समय सुगंधमय साबुन लगाकर खूब नहाकर अच्छी तरह श्रृंगार करके वह नारी रास्ते पर कहीं चल रही है। वास्तव में वह अपनी आपकी आत्मा को बेचने को जा रही है। कवि के अनुसार वह औरत एक माँ है। शायद वह विधवा भी हो सकती है। ऐसी नारी को समाज में होने वाली यथा स्थिति कवि व्यंग्य से इन पंक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

"දර හනසු ලා ලිපට दर हनसु ला लिपट
කඩයප්පං සෑදීමට कडयप्पं सैदिमट
පිඹින දුක් ගින්දරෙන් ඔප් නැඟුණ पिंबिन दुक गिन्दरेन ऑप नॅगुण
දුක හනා කැටයම් කළ दुक हा अना कॅटयम कल
දහදියෙන් පිරියම් කළ दहदियेन पिरियम कल
ඒ මුහුණ ए मुहुण
මේ මවගෙ මුහුණෙහි ම"[9] मे मवगे मुहुणेहि म"

कवि कहते हैं कि सुबह से रात तक कुछ औरतें चूल्हे के पास ही रहते हुए भोजन तैयार करती रहती हैं और तब चूल्हे की आग से उसकी सुंदर सूरत पसीने से भर जाती है। मेहनत से खान–पान बनाकर जीवन–यापन करने वाली नारी का चित्रण यहाँ हुआ है। इन पंक्तियों के माध्यम से और स्पष्ट हो जाता है कि कवि ने नारी की दयनीय दशा को समाज में रहने वाले पाठकों के सामने ले जाने की कोशिश की है। तत् युगीन समाज की नारी को मान्यता थी कि घर में रहकर घर का काम सँभालना चाहिए। नारी भी अपना मन लगाकर अपने परिवार के लिए पूरी तरह कर्तव्य परायण नारी बन जाती है। उसको अपना ख्याल रखने के लिए समय नहीं है। समाज की ओर से भी उन नारियों के लिए विशेष ध्यान नहीं दिया गया है।

"රෑට මසට අඬ ගසනා බව ලත්තු रैट मसट ॲंड गसना बव लत्तू
මරදානේ ඉස්ටේෂම බදු ගත්තු मरदाने इष्टेसम बदु गत्तू
ඇඟින් කනින් ඉඟි මර මර දෙයි ඔත්තු ॲहिन कनिन इँगि मर मर देयि ऑत्तू
ප්‍රවේසමෙන් මග ඇරපන් බව ලත්තු"[10] प्रवेसमेन मग ॲरपन बव लत्तू।

तत्कालीन समाज में रहनेवाली नारी गण की यथा स्थिति का निरूपण इसमें हुआ है। संस्कार रहित समाज में कुछ नारी वेश्या वृत्ति पर निरत है और रात को नगर का वातावरण इसलिए बहुत चिंतनीय होता है। कवि कहते हैं कि कॉलबँ में स्थित मरदान नगर की स्टेशन पर हमेशा ऐसी स्त्रियाँ हैं और पूरे समाज को उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए। वास्तव में समाज में नारी की स्थिति इस प्रकार सोचनीय बन जाने का कारण केवल वे लोग शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करना ही नहीं, बल्कि समाज की ओर से भी उन नारियों को उस हालात पर रख दिया है। समाज की नज़र उनकी ओर कभी दयनीय नहीं बन जाती। तब समाज में ऐसी आदत पड़ जाती है कि प्रत्येक स्त्री की ओर लोग तुच्छ नज़र से देखते हैं। प्रायः प्रत्येक नारी एक वेश्या नहीं होती है और अगर कोई नारी एक वेश्या बन गयी है, तो उसका कारण समाज की कोई गलती हो सकती है।

"ගෑස් කනුව යටට වෙලා පාර අයිනෙ गैस कनुव यटट वेला पार अयिने
මාග්‍රට් නෝනා! माग्रट नोना!
කවුද හොයන්නේ कवुद हॉयन्ने
සරුව පිත්තල ඇඳුම් ඇඳගෙන सरुव पित्तल ॲदुम ॲदगेन
කම්මුල් & තොල් රතු කරගෙන कम्मुल–तॉल रतु करगण
සැන් නාගෙන सॅन नागेन
ඉඟි බිඟි පාමින් ඉව කරමින්\ इँगि बिँगि पामिन इव करमिन
ආදරේ මොහොතකට आदरे मॉहॉतकट
විකුනාගන්නට කෙනෙකු හොයනවද? विकुनागन्नट केनेकु हॉयनवद?
ලමයින් නිදි කරවලා ද ආවේ लमयिन निदि करवलाद आवे
උන් ඇඬුව ද හාමත් වී"[11] उन ॲंडुव द हामत वी।

शोषित वर्ग की नारी की दयनीय दशा कवि ने यहाँ व्यक्त किया है। वेश्या वृत्ति में निरत नारी के प्रति इन पंक्तियों में विद्यमान होता है। कवि कहते हैं कि माग्रट नामक एक नारी शहर में अच्छी तरह श्रृंगार करके अपना प्रेम बेचने की प्रतीक्षा कर रही है। कवि उस औरत से पूछता है कि क्या तुम बच्चों को सुलाकर आयी हो या नहीं? उनके रोने का कारण भूख है क्या? कवि ने उस प्रकार नारी के प्रति दयनीयता प्रकट की है, क्योंकि वह औरत अपनी सच्ची मर्ज़ी से वह काम नहीं कर रही है और गरीबी के कारण और अपने बच्चों की भूख मिठाने के लिए ऐसी वृत्ति में फँस गयी है। कवि ने सौंदर्यात्मक ढंग से समाज में रहनेवाली गरीब औरत की यथा स्थिति का एक पहलू प्रस्तुत किया है।

''ගැහැනිය ලොව පහල වුනේ गॅहॅणिय लॉव पहल वुने
මිනිසාගේ ඉල ඇටයෙන් मिनिसागे इल ॲटयेन
එදා ඉදන් අද වනතුරු एदा इदन अद वन तुरु
ඒ සිදුරෙන් රිංගා ගෙන ए सिदुरेन रिंगा गेन
හිතුනු අතක ඈ යනවා. हितुनु अतक ऐ यनवा
ඒ සිදුරෙන් ए सिदुरेन

ඔබ ඔහුගෙන් පිටට ऑब ऑहुगेन पिटट
නොයන් ඒ සිදුරෙන් ගත් ගැහැනිය नॉयन ए सिदुरेन गत गॅहॅनिय
ඒ සිදුරෙන් ए सिदुरेन
යලි ඉවතට පිට නොදමන්"[12] यलि इवतट पिट नॉदमन

समाज में नारी की स्थिति कवि ने व्यंग्य से यहाँ प्रस्तुत किया है। कवि कहते हैं कि नारी का जन्म पुरुष की गोद से हुआ है। वहाँ कवि ने सारे पुरुष वर्ग को व्यंग्य से प्रहार किया है। वास्तव में पुरुष सोचते हैं कि नारी को हमेशा उसके अधीन में ही रहना चाहिए। पुरुष नारी से प्रत्येक काम करवाने में अपना बल और अधिकार दिखाते रहते हैं। इसलिए पैत्रिक सत्त समाज में रहने वाली नारी का स्वभाव अति दयनीय है। कुछ ऐसी औरतें भी हैं, जो अपनी सीमाओं में बँधे न रहकर गलत काम कर रही हैं। कवि ऐसी स्त्रियों को भी बहुत महत्वपूर्ण संदेश इन पंक्तियों के माध्यम से देते हैं।

"වැහි කලු වලින් නේද වැහි වහින්නෙ वॅहि कलु वलिन नेद वॅहि वहिन्ने
සිරි සිරි ගා වැහි වහිද්දී सिरि सिरि गा वॅहि वॅटेद्दि
ජනේල වීදුරුව දිගේ जनेल वीदुरुव दिगे
හෙමින් හෙමින් ගලා බහින වතුර බිංදු हेमिन हेमिन गला बसिन वतुर बिंदु
නොරටක රස්සාවක සිටි සැමියා नॉरटक रस्सावक सिटि सॅमिया
කලාතුරෙන් එනු දකිනා कलातुरेन एनु दकिना
බිරිඳගෙ කම්මුලේ සතුටු කඳුලු වගෙයි-"[13] बिरिंदगे कम्मुल सतुटु वागेयि।

आधुनिक समाज में रहनेवाली नारी के संबंध में कवि ने यहाँ प्रस्तुत किया है। देश की अर्थ व्यवस्था की बिगड़ी हुई परिस्थिति में बेरोज़गारी के बुरे असर से प्रभावित होकर बहुत लोग देश छोड़कर नौकरी ढूँढ़ने के लिए विदेश चले जाते हैं। इन पंक्तियों में चर्चित औरत का भी पति नौकरी के लिए किसी भी देश पर गया है और अपने पास पति न होने के कारण वह नारी बहुत वेदना से समय बिता रही है। कवि कहते हैं कि बहुत दिनों के बाद उसके पति के आने की ख़बर पाकर उस औरत की आँखों में खुशी के आँसू भर आता है, मानो खिड़की के शीशे पर से बहती हुई बारिश की बूँदें जैसी है। कवि ने यहाँ देश की अव्यवस्थित आर्थिक परिवेश से बुरी तरह प्रभावित नारी की यथा स्थिति व्यक्त की है।

මුඩුක්කු දොරකඩ හිටගෙන मुडुक्कु दॉरकड हिटगेन
ඉව කර කර හිටියා इव कर कर हिटिया
රෝස දෙකම්මුල් रोस देकम्मुल
මිනී පිනි දිය සුවඳ मिनी पिनि दिय सुवँद
කුරුලෑ නියඟලා මල් कुरुलै नियँगला मल
දෑස කරකවා ඉඟි බිඟි පා दैस करकवा इँगि बिंगि पा
ඇයිද බලන්නේ මා දිහා ॲयिद बलन्ने मा दिहा
කාරෙක හරවන්ඩ සුදෝ कारेक हरवंड सुदो
විමුක්තියට යන්නේ මේ ලෙන් එකෙන් विमुक्तियट यन्ने मे लेन एकेन
ඇත්තද ඔය? ॲत्तद ऑय?
අනේ සර් अने सर
කැමැත්තකින් කරන වැඩක් නෙමෙයි මේක कॅमॅत्तकिन करन वॅडक नॅमॅयि मेक

කන්ඩ බොන්ඩ විදියක් නෑ कंड बॉड विदिहक नै
දරු පැටවුන් බඩ ගින්නේ"[14] दरु पॅटवुन बड गिन्ने

आधुनिक समाज में रहने वाली नारी की स्थिति कवि ने यहाँ व्यक्त की है। एक आदमी अपनी गाड़ी चलाते हुए शहर से आते समय एक खूबसूरत औरत से मुलाकात होता है। यहाँ कवि ने उस औरत का स्वभाव भी प्रस्तुत किया है। वह आदमी उस औरत से पूछता है कि तुम क्यों मेरी ओर देख रही है? तब वह औरत कहती है कि स्वर्ग तक जाने का रास्ता यहाँ पर पड़ा है और आप अपनी गाड़ी उसकी ओर चलाइए। उसके साथ–साथ वह औरत कहती है कि बाबू जी मैं यह काम मन की सच्चे मन से नहीं कर रही हूँ, लेकिन मेरे बच्चे भूखे में रो रहे हैं। इसलिए कुछ पैसे कमाने के लिए मैं इस धंधे पर निरत होती हूँ। कवि ने एक वेश्या वृत्ति में निरत औरत की वाणी को लेकर तत् युगीन समाज में रहने वाली गरीब और उत्पीड़ित नारी का चित्रण किया है।

"තේ වත්තේ දලු නෙලලා ते वत्ते दलु नेलला
ෆැක්ටේරියෙ වැඩ කරලා फॅक्टेरिये वॅड करला
කන්තෝරුවෙ ටයිප් ගසා कंतोरुवे टयिप गसा
කිරි අරගෙන එයි අම්මා किरि अरगेन एयि अम्मा
මල් මල් සාරිය ඇඳලා मल मल सारिय ॲंदला
වීදි කොනේ රැක ඉඳලා वीदि कॉने रॅक इँदला
ඇස් ඉස් මස් ලේ දීලා ॲस इस मस ले दीला
කිරි අරගෙන එයි අම්මා"[15] किरि अरगेन एयि अम्मा

जीवन संघर्ष की लहरों से लड़ने वाले विविध नारी पात्रों के संबंध में इन पंक्तियों में उपलब्ध होता है। कवि कहते हैं कि एक माँ चाय के पत्ते तोड़कर एक चायवाले कारखाने में काम करके अपने बच्चों के लिए सब कुछ ले आती है। और एक माँ दफ्तर में काम करके बच्चों की भूख मिटाती है। ऐसे अच्छे नौकरी करनेवाले माताओं के अतिरिक्त ऐसी अनपढ़ औरतें भी इस समाज में रहती हैं, जो वेश्या वृत्ति में निरत होकर पैसे कमाते हुए अपने बच्चों की भूख मिटा देती है। एक ही समाज में दो–दो वर्ग के औरतों का संभव होने पर कवि अपनी दयनीय व्यक्त करते हैं। वास्तव में गरीब होने के कारण प्रत्येक माँ अपने बच्चों के लिए कुछ भी करके धन कमा सकती है। धन कमाने के लिए उन माताओं के द्वारा लिये जानेवाला वह निर्णय कभी अच्छा है और कभी बुरा।

"ඔබේ සුමුදු බඳ ඇයි ළඳුනේ ऑबे सुमुदु बँद ॲयि लँदुने
ලෝහවලට ඔබ විකුණන්නේ? लोह वलट ऑब विकुणन्ने?
ඔබේ අගය මිල කරනට නොහැකියි ऑबे अगय मिल करनट नॉहॅकियि
එහෙත් ඔබට ඒ අගය නොවැටහෙයි३३ एहेत ऑबट ए अगय नॉवॅटहेयि.....
३३පහන් කණුව යට.......पहन कनुव यट
අඩ අඳුරේ ඔබ अड अँदुरे ऑब
වට පිට බලමින් ඉන්නා වේලෙදී वट पिट बलमिन इन्ना वेलेदि
ඈත කවුළුවෙන් ඔබ දෙස බලනා ऐत कवुलुवेन ऑब देस बलना
මගේ සිතට මහ දුකක් නැඟෙයි-"[16] मगे सितट मह दुकक नॅगेयि।

वेश्या वृत्ति में निरत गरीब औरत से कवि उस प्रकार कहते हैं। 'व्यंग्या' नामक काव्य कृति में आनेवाली 'वेसँगनकट' नामक कविता से इन पंक्तियों को उद्धृत किया गया है। कवि उस वेश्या

से पूछते हैं कि तुम क्यों अपने बदन को लोह के लिए बेच रही है? औरतों की कीमत बहुत बढ़िया है, लेकिन तुम वह समझ नहीं सकती। कवि के इन बातों से स्पष्ट होता है कि पूरे नारी वर्ग के प्रति कवि अपना गौरव व्यक्त करते हैं और वेश्या वृत्ति में निरत नारियों की ओर कवि दयनीयता भरी आँखों से देखते हैं। उसके बाद कवि कहते हैं कि मैं बिजली के खंभे के नीचे आधे अंधेरे में खड़ी होकर इधर–उधर देखते हुए रहने वाली औरत की ओर खड़े देख रहा हूँ। वास्तव में स्पष्ट है कि उस औरत को देखकर कवि के मन में बड़ा दुख आता है। कवि यहाँ पूरे समाज में रहनेवाले दया से युक्त व्यक्तियों का प्रतीक माना जा सकता है और ऐसे व्यक्ति हमेशा प्रत्येक औरत पर अपना गौरव व्यक्त करते हैं, लेकिन गरीब होने के कारण कुछ नारी ऐसे धंधों पर लग जाती हैं। कवि उस बात को लेकर बड़ी दनियता से इन पंक्तियों को लिखा है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रतिनिधि श्रेष्ठ पद्य साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत और सिंहल साहित्य की स्वतंत्रता के बाद कॉलबँ युगीन प्रतिनिधित्व करनेवाले पद्य साहित्यकार महगम सेकर के द्वारा रचित काव्यों में समाज यथार्थवादी विचारधारा विद्यमान होती है। दो अलग भाषाओं के माध्यम से एक ही विषय वस्तु को लेकर दोनों कवियों के द्वारा चित्रित की गयी समाज यथार्थवादी विचारधारा की ओर विहंगम दृष्टि डालते समय दोनों के काव्यों में समाज यथार्थ का चित्रण विद्यमान होता है।

नारी से संबंधित समाज यथार्थवादी दृष्टिकोण दोनों कवियों के काव्यों में परिलक्षित होता है। सुमित्रानंदन पंत ने नारी उद्धार की ओर अधिक ध्यान आकृष्ट किया है, लेकिन महगम सेकर ने नारी उद्धार करने से हटकर केवल नारी से संबंधित यथास्थिति का वर्णन किया है। सुमित्रानंदन पंत के 'युगवाणी' काव्य संग्रह में अंतर्गत 'नारी' नामक काव्य और 'लोकायतन' महाकाव्य में आनेवाला 'ज्योति द्वारा' काव्य में आर्थिक परिदृश्य की दृष्टि से नारी की उद्धार करने की आवश्यकता दिखायी दी है। साथ में 'लोकायतन' में अंतर्गत 'विज्ञान' नामक कविता नारी को बंधन से मुक्त करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त सुमित्रानंदन पंत पैत्रिक सत्त समाज में रहनेवाली नारी की स्थिति के साथ–साथ समाज में नारी का अपमान करनेवालों के विरूद्ध में आवाज़ उठायी है। कवि सेकर ने भी अपने 'हेट इरक पाययि' नामक कृति में पैत्रिक सत्त से युक्त समाज में रहनेवाली नारी का वर्णन किया है। जिस प्रकार सुमित्रानंदन पंत ने 'ग्राम्या' काव्य संग्रह में अंतर्गत 'मज़दूरिनी के प्रति' नामक कविता में मर्दों के काम करते हुए मेहनत करनेवाली युवा नारी के प्रति अपने प्रगतिवादी विचारधारा व्यक्त की है, उसी प्रकार नारी से संबंधित यथार्थवादी चेतना चाय के पत्ते तोड़नेवाली औरत के विषय में सेकर की भी 'हेट इरक पाययि' काव्य रचना में परिलक्षित है।

दोनों कवियों के काव्यों की तुलना करते समय यह प्रमाणसिद्ध बात है कि सुमित्रानंदन पंत से अलग दृष्टिकोण से महगम सेकर ने में नारी की यथा स्थिति का मूल्यांकन अपने काव्यों में किया है। गाँव में गृहिणी बनकर घर के कारोबार सँभालने वाली अनपढ़ नारी के जीवन के प्रति कवि ने 'प्रबुद्ध' काव्य रचना में लिखा है। कवि सेकर ने वेश्यावृत्ति पर निरत नारी की दशा निरंजला नामक पात्र के माध्यम से 'प्रबुद्ध' काव्य रचना में और मागरट नामक नरी पात्र के माध्यम से 'हेट इरक पाययि' काव्य रचनाओं में परिलक्षित की है। 'राजतिलक, लयनल सह प्रियंत', 'मकनिसाद यत' और 'व्यंग्या' आदि कृतियों में भी वेश्यावृत्ति में लीन होनेवाली नारी की ओर अपनी दयनीयता प्रकट करते हुए कवि कहते हैं कि गरीब होने के कारण कुछ नारी ऐसे बुरे धंधों पर निरत होती हैं। महगम सेकर की तुलना में सुमित्रानंदन पंत ने वेश्याओं का ऐसी दशा अपने काव्यों में परिलक्षित नहीं किया है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि सुमित्रानंदन पंत और महगम सेकर की कविताओं में नारी–जीवन की वास्तविक स्थिति को कभी एक दूसरे से समान और कभी एक दूसरे से भिन्न विचार विद्यमान होते हैं।

पाद टिप्पणियाँ

1. पंत, (2022, पृ. 100)
2. पंत, (2022, पृ. 196, 197)
3. वही, (2022, पृ.197)
4. पंत, (2022, पृ.238)
5. पंत, (2022, पृ.348)
6. पंत, (2022, पृ.55)
7. सेकर, (2019, पृ.39, 40)
8. सेकर, (2019, पृ.43, 44)
9. सेकर, (2019, पृ.46)
10. सेकर, (2019, पृ.36)
11. सेकर, (2019, पृ.116,117)
12. वही, (2019, पृ.118, 119)
13. सेकर, (2019, पृ.41)
14. सेकर, (2019, पृ.05)
15. सेकर, (2019, पृ.43, 44)
16. सेकर, (2019, पृ.54, 55)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जैन, निर्मला. (2014) आधुनिक साहित्य–मूल्य और मूल्यांकन. राजकमल प्रकाशन
2. जोशी, शांति. (2001) सुमित्रानंदन पंत–जीवन और साहित्य. राजकमल प्रकाशन
3. तँवर, मंजु. (2017) साहित्य की सैद्धांतिकी. स्वराज प्रकाशन
4. तिवारी, एस. पी. (2011) छायावादी काव्यों में कल्पना तत्व. आशीश प्रकाशन
5. पंत, सुमित्रानंदन. (1983) शिल्प और दर्शन. राज नारायण लाल बेणी माधव प्रकाशन
6. पंत, सुमित्रानंदन. (2014) वाणी. लोक भारती प्रकाशन
7. पंत, सुमित्रानंदन. (2014) वीणा. लोक भारती प्रकाशन
8. पंत, सुमित्रानंदन. (2017) ग्राम्या. लोक भारती प्रकाशन
9. पंत, सुमित्रानंदन. (2022) सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली 1. राजकमल प्रकाशन
10. पंत, सुमित्रानंदन. (2022) सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली 2. राजकमल प्रकाशन
11. पंत, सुमित्रानंदन. (2022) सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली 3. राजकमल प्रकाशन
12. पंत, सुमित्रानंदन. (2022) सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली 4. राजकमल प्रकाशन
13. पंत, सुमित्रानंदन. (2022) सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली 5. राजकमल प्रकाशन
14. पंत, सुमित्रानंदन. (2022) सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली 6. राजकमल प्रकाशन
15. पंत, सुमित्रानंदन. (2022) सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली 7. राजकमल प्रकाशन
16. अमरसिंह, डब्लियु. ए. (2022) महगम सेकरगे काव्य हा गीत निर्माण. सरसवि प्रकाशन
17. करुणारत्न, कुसुमलता और विजेसूरिय, सरत. (2018) नव कवि युगय. विजेसूरिय ग्रंथ केंद्रय
18. करुणारत्न, गाविन. (1963) सिंहल कविये नव युगय. समन प्रकाशन
19. कुमारगे, डी.जे. (1990) सुपुबुदु कला विदु महगम सेकर. गॉडगे प्रकाशन

20. गम्लत, सुचरित और विजेसिंह, रत्न श्री. (1994) महगम सेकर सह समाज यथार्थय. गॉडगे प्रकाशन
21. गलहिटियाव, पी.बी. (2017) नूतन पद्य संग्रहय. निर्मल प्रकाशन
22. गुणरतन भंते जी. (1997) सिंहल पद्य साहित्यये विकासनय. अभय प्रकाशन
23. सेकर, महगम, (20019) हेट इरक पाययि. गॉडगे प्रकाशन
24. सेकर, महगम, (2018) राजतिलक, लयनल सह प्रियंत. गॉडगे प्रकाशन
25. सेकर, महगम, (2019) नॉमियेमि. स्टॅम्फ़र्ड लेक प्रकाशन
26. सेकर, महगम, (2019) प्रबुद्ध. गॉडगे प्रकाशन
27. सेकर, महगम, (2019) बोडिम. गॉडगे प्रकाशन
28. सेकर, महगम, (2019) मकनिसाद यत. गॉडगे प्रकाशन
29. सेकर, महगम, (2019) व्यंग्या. गॉडगे प्रकाशन
30. सेकर, महगम, (2019) सक्वा लिहिणि. गॉडगे प्रकाशन